संस्कृत– साहित्य में पर्यावरण : एक दृष्टि

डॉ0 बृजेन्द्र पाण्डेय

पर्यावरण दो शब्दों परि और आवरण से मिलकर बना है। परिपूर्वक और आङ्:पूर्वक (दोनों उपसर्ग) वृ धातु (वरण करना) से ल्युट् प्रत्यय (भाव में) होने पर पर्यावरण शब्द निष्पन्न होता है । उपसर्ग के कारण धातु का अर्थ बदल जाता है । परि का अर्थ है–चारों ओर, वही आवरण का अर्थ है–**आच्छादनीयानि** (ढँकने वाले) यहाँ पर्यावरण एक विशेष अर्थ मे रूढ़ है । यह शब्द प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध नहीं होता है ।